उपसंहार (निष्कर्ष)

श्री कालिकाप्रसाद शुक्ल कृत "श्रीराधाचरित महाकाव्यम्" का काव्यशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करते हुए मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मेरा यह अध्ययन भक्तजनों एवं काव्यरसिकजनों के लिए समान रूप से आनन्दप्रद सिद्ध होगा क्योंकि आचार्य शुक्ल जी का यह महाकाव्य भक्तिरस प्रधान तथा काव्यशास्त्र की दृष्टि से काव्यगुणों से परिपूर्ण है। जैसे किसी कवि ने कहा है कि –

चलो सखी उस देश को, जहाँ कृष्ण का राज।
जल भरें दर्शन करें, एक पन्थ दो काज।।

ऐसी ही कुछ प्रेरणाजनक पंक्तियाँ मेरे मानस के अन्तर्गत इस प्रकार प्रस्फुटित हुईं–

"कुरु सखि हे कर्म तत्, राधानाम भजनकम्।
जीवनमपीदं सिद्धं, चतुर्वर्गस्य साधकम्।"

कवि द्वारा प्रदत्त नामकरण "श्रीराधाचरित महाकाव्यम्" ही इस बात का प्रमाण है कि यह सर्वगुण सम्पन्न ऐसा महाकाव्य है जिसमें श्री राधाचरित का ही प्रधानतया गुणगान किया गया है । इसीलिये यह नायिका प्रधान महाकाव्य है जिसकी नायिका हैं श्री राधा जी तथा नायक रूप में चित्रित हैं श्री कृष्ण जी। इनके अतिरिक्त श्री राधाजी की माता कीर्ति, पिता वृषभानु उनके कुलगुरु आचार्य गर्ग मुनि तथा शबरियों का चरित्र चित्रण भी श्री राधाकृष्ण के भक्त पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस महाकाव्य में कवि ने श्री राधा–कृष्ण का चरित्र चित्रण सामान्य पात्रों के रूप में वर्णित नहीं किया है, बल्कि श्री राधा का आद्या पराशक्ति रूप तथा श्री कृष्ण का परमेश्वरत्व रूप बहुत से मनोहर छन्द समूहों के द्वारा, कोमल कान्त पदावलियों के द्वारा तथा विशिष्ट अलंकारों के द्वारा ऐसे गुम्फित किया गया है कि जिससे काव्यरसिक जन इसमें काव्यरसों का आस्वादन कर सकें तथा भगवान् के चरणकमलों में अनुरक्त भक्तजन इस काव्य का बारम्बार पाठ करते हुए भगवान् के चरणारविन्दों का चिन्तन मनन निदिध्यासन कर सकें। और तो क्या अधिक कहें, इस में रासलीला के वर्णन में

शान्त रस का जो आप्लावन दृष्टिगोचर होता है वह अपने आप में इस काव्य का एक वैशिष्ट्य है।

वृषभानु के द्वारा प्रातः काल सरोवर में स्नान करने के उपरान्त सूर्य को अर्ध्य देते समय एक अद्भुत कमलासन पर प्रकट होकर श्री राधा बालिका अपना दिव्य परिचय देती हुई स्वयं कहती है कि–

यत इदं जगतः स्थितिसंभवौ नियतकालसमापितकर्मणः।
प्रविलयोऽपि च यत्र समर्थितः परमदुर्लभतत्त्वमहं हि तत्।।3–65।।
परसमाधिसमाहितमानसैः क्षपितकल्मषयुक्तजनैरहो।
परमतत्त्वमिदं न हि दृश्यते तव तु भागवतस्य पुरः स्थितम्।।3–66।।
किमपि तत्त्वमचिन्त्यमनुत्तमं तदतिरिक्तमिहास्ति न किञ्चन।
यदिति वेदवचः परिभाषते तदहमेतदुपास्व यथा विधि।।3–67।।[1]

यह महाकवि द्वारा प्रस्तुत स्वयं राधा जी के शब्दों में वर्णित उनके आद्या पराशक्ति रूप का ज्वलन्त अन्तरंग प्रमाण है। इसीलिये उन्हीं के नाम के आधार पर इस महाकाव्य का नामकरण किया गया है।

जब वृषभानु घर लाकर इस कमलबालिका को अपनी धर्मपत्नी कीर्ति की गोद में दे देता है तभी देवता आकाशवाणी करके इस बालिका के दिव्य रूप की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि–

धन्यासि कीर्ते स्पृहणीयदिष्टे निरूजनं ब्रह्म तवाङ्कपालौ।
कन्यास्वभावेन विराजतेऽलं समुद्गता देवगिरस्तदैताः।।[2]3–72।।

इससे सिद्ध होता है कि कमलबालिका राधा सामान्य कन्या न होकर दिव्य शक्ति स्वरूपा है। इसी प्रकार श्री कृष्ण के दिव्य स्वरूप का संकेत करते हुए कवि ने कहा है कि–

देवाधिदेवमधुसूदनवन्द्यमानं
राधामहः किमपि तत्त्वमकल्प्यमानम्

---

[1] श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 3/65, 66, 67।।
[2] श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 3–72।।

श्यामेन तेन मुरलीमधुरं विनेदे

गौरेण तेन वृषभानु यशो वितेने।।1–10।।[1]

देवों के भी देव श्रीकृष्ण के द्वारा भी वन्दनीय राधा नामक अद्भुत तेज है। उसी तेज ने श्याम वर्ण कृष्ण बनकर मुरली बजाई तथा गौर वर्ण राधा बनकर वृषभानु का यश फैलाया। इसी प्रकार गर्गाचार्य श्री कृष्ण के नामकरण संस्कार में उनकी दिव्यता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि–

देवर्षि राजर्षि महर्षि मुख्यं विलक्षणं स्थावरजङ्गमाख्यम्।

शेते जगद् यस्य विशालकाये नारायणः सोऽपि यदोकुमारः।।7–29।।[2]

श्री राधा कृष्ण की एकता का रहस्योद्घाटन करते हुए गर्ग मुनि कहते हैं कि–

रहस्यमेकं शृणुतार्यवृत्ता यत्तत्त्वमेकं श्रुतयो वदन्ति।

द्वेधा तदेव व्रजमण्डलेऽभूद्राधाद्वितीयं वरसानुसानौ।।7–31।।[3]

हे आर्यजनो! एक रहस्य सुनो। श्रुतियाँ जिस एक तत्त्व का वर्णन करती हैं, वही तत्त्व व्रजमण्डल में दो भागों में विभक्त हो गया है– एक कृष्ण तत्त्व और दूसरा बरसाने में राधा तत्त्व। श्री कृष्ण की दिव्यता का एक और प्रमाण इस प्रकार दिया गया है–

सानन्दनन्दस्तुतभागधेया व्रजाङ्गनागीतयशा यशोदा।

कृष्णाननं चुम्बति चारुचन्द्रं ब्रह्माण्डनाथोऽप्यबलाङ्कपालौ।।7–76।।[4]

कितने आश्चर्य की बात है कि ब्रह्माण्ड के नाथ भी श्री कृष्ण रूप में एक अबला की गोद में क्रीड़ा कर रहे हैं।

ये दोनों दिव्य तत्त्व जब निकुञ्ज लीला कर रहे होते हैं तथा श्री कृष्ण श्री राधा जी का शृङ्गार करते हैं तो ऐसा आभास होता है कि जैसे कोई रसिक नायक अपनी प्रियतमा नायिका का शृङ्गार करता हुआ शृङ्गार रस की पुष्टि कर रहा हो। उनके संयोग शृङ्गार परिपाक का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है–

सरसिजदलकान्ते राधिकायाः कपोले

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 1–10।।*
[2] *श्रीराधा चरितें–7–29।।*
[3] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 7/31*
[4] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–7/76*

मृदुकुसुमशलाकाप्रान्तभागैः सलीलम्

करधृतहनुजानुः पुष्पनिःष्यन्दसारैः

पुलकितवनमाली चित्रलेखां विधत्ते।।12–2।।[1]

सुरभिकुसुममाला केशपाशेऽपि गुम्फन्

असितभुजगलीले गन्धवाहाभिलोलात्।

जघनशयितराधापक्वबिम्बाधरोष्ठं

मधुकर इव पद्मं सेवते साभिलाषः।।12–3।।[2]

इसी प्रकार शबरी समागम के प्रसंग में विप्रलम्भ शृङ्गार का दृश्य भी दर्शनीय है जबकि शबरियों को श्री कृष्ण के वियोग में एक – एक पल भी करोड़ों कल्पों के समान बिताना कितना कठिन हो जाता है। जबकि उनके हृदय विरह की ज्वाला से दग्ध हो रहे हैं–

विश्रम्य क्षणमुपगूहनं प्रगाढ़ं

देहि त्वं रमण चिरात् प्रतीक्ष्यमाणः।

कन्दाशैरुपवसनैरकल्मषाणां

स्वान्ते नोनिगडितपाद कुत्र यासि।।10–62।।[3]

पाथोजाङ्घ्रिमृदुरजः स्तने विलेप्तुं

पन्थानं प्रिय सततं विलोकयन्त्यः।

एकैकं क्षणमपि कल्पकोटि तुल्यं

ज्वालालीढसुमनसः कथं नयेम।।10–63।।[4]

अर्थात् हे रमण् चिरकाल से प्रतीक्ष्यमाण तुम क्षण भर विश्राम करके प्रगाढ आलिंगन प्रदान करो। कन्दमूल खाकर उपवास करने वाली निष्पाप हुई हमारे अन्तःकरण में चरणों को गड़ाए हुए, अब तुम कहाँ जा रहे हो। तुम्हारे चरणकमलों की

---

[1] *श्रीराधा चरिते– 12/2*
[2] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 12/3*
[3] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 10/62*
[4] *श्रीराधा चरिते–10/63*

मृदुरज को अपने स्तनों पर लेपने के लिये निरन्तर बाट देखती हुई हम विरहाग्नि से दग्ध हृदय वाली एक–एक पल को करोड़ों कल्पों के समान कैसे व्यतीत करेंगी?

द्वादश सर्ग में श्री राधा का शृङ्गार करने के पश्चात् जब श्री राधाकृष्ण में प्रेमालाप पूर्ण परस्पर हास परिहास की बातें होती हैं तो हास्य रस का परिपाक दर्शनीय होता है। श्री राधा जी श्री कृष्ण को स्त्रियों की वेशभूषा पहनाकर अपनी दासी के रूप में नियुक्त करने की कल्पना करके उसके पश्चात् सखियों आदि के बीच में उनके विषय में हास्यपूर्ण अद्भुत कल्पनाएँ करती हैं तथा श्री कृष्ण भी विनोद पूर्ण ढंग से एक–एक बात का हास्यजनक उत्तर देते हैं तो हास्य रस भी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है। जैसे श्री कृष्ण कहते हैं कि–

भूमौ निपात्य करतालिकयावघाते
वक्षोजवाससि झटित्यवनिं प्रयाते।
मन्दस्मिते तु मयि पश्यति ते वयस्या
हास ह्रिया हि परमां मुदमादधीत।।12–42[1]
रे धृष्ट शिष्टरमणीरमणक्षमासु
पुष्पावनद्धनवसौरभमालतीषु।
मत्तद्विरेफ इव कामयसे विहर्तुं
सख्या इदं प्रवचनं मयि सौधधारा।।12–46।।[2]

मुझे पृथ्वी पर गिराकर हथेलियों से पीटते हुए जब तुम्हारी सखी की छाती का वस्त्र नीचे गिर जाएगा तब मुझे मुस्कराकर देखता हुआ जानकर तुम्हारी सखी हँसी और लज्जा से परमानन्द को प्राप्त होगी।

जब तुम्हारी सखी यह कहेगी कि अरे दुष्ट ढीठ कुलवधुओं के रमणयोग्य भूमि पर पुष्पित सुगन्धित मालतियों के बीच मतवाले भँवरे की तरह तू रमण करना चाहता है। तब तुम्हारी सखी का यह प्रवचन मुझे अमृतधारा के समान आनन्दप्रद लगेगा। इस प्रकार वे भगवान् मुरारि सम्माननीया श्री राधा जी को चाटुता पूर्ण वाक्यों से सम्बोधित

---

[1] *श्रीराधा चरिते– 12/42*
[2] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 12/46।।*

करके तथा अनेक आलंगिनों से सम्मानित करके नवनिकुञ्ज विहार भूमि पर अन्तर्धान हो गए।

कवि ने नवम सर्ग में शान्तरसपरिपूर्ण रासलीला का अत्यन्त मनोहर वर्णन किया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस रास में व्रजांगनाओं के बिना कोई भी स्त्री भी प्रवेश नहीं कर सकती उस रास के दर्शन करने की इच्छा से भगवान् महेश ने भी व्रजांगना का रूप धारण कर लिया।

गोपाङ्गनावेशधृतो महेशस्तां चातुरीं नव्यकलाञ्चतां ताम्।

लास्यस्य भङ्गीमतुलां छटां तां दृष्ट्वा तदा विस्मयमाजगाम्।।9–50।।[1]

भगवान् महेश ने रासलीला में व्रजांगनाओं का जैसा मण्डल पृथ्वी पर देखा, वैसा ही आकाश में तथा सभी दिशाओं में देखा।

इसी लीला प्रसंग में कवि ने भक्तिरस की पराकाष्ठा भी इस प्रकार प्रस्तुत की है–

दन्दह्यमाना रविरश्मिपुञ्जैर्धारानिपातैश्चविशीर्ण काया।

मुकुन्दपादाब्जनिविष्टचित्ता नित्यं धरित्रीतप आचरन्ती।

प्रसून हस्ता तरला वाराकी साक्षात्सुधां पातुमनीश्वरासीत्।

वेणोस्ततोरन्ध्रत इष्टसिद्धौ प्रासूत वंशान् स्वशरीरभागात्।।[2]*9–66, 67।।*

सूर्य की हजारों किरणों से अत्यन्त दग्ध होती हुई, वर्षा में जल धाराओं से क्षत विक्षत शरीर वाली, पृथ्वी ने श्री कृष्ण के चरण कमलों में मन को लगाकर हाथों में पुष्प लेकर दिन रात तपस्या करते हुए भी भगवान् मुकुन्द की अधरसुधा का साक्षात् पान करने में असमर्थ होकर बेचारी ने तरलित होकर अपने शरीर से बाँसों को उत्पन्न किया और फिर वंशी का निर्माण किया। तब कहीं जाकर उसके छिद्रों के द्वारा अधर सुधारस का पान किया–

कितनी आश्चर्यजनक भक्तिरस की पराकाष्ठा है यह। वास्तव में श्री राधाचरितमहाकाव्य भक्तिरस प्रधान रचना है जिसमें कवि की श्री राधा भक्ति कदम

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 9/50*

[2] *श्रीराधा चरिते– 9/66, 67।।*

कदम पर झलकती है। श्री राधापद प्राप्ति के उद्देश्य ही कवि ने इस महाकाव्य का निर्माण किया तथा उद्घोषणा कर दी–

विद्वद्वन्दित चन्द्रशेखरसुधी रामाञ्चिता मंगला।
यं धीरं सुषुवे प्रसाद पदकं श्रीकालिकाख्यं सुतम्।
तत्काव्ये वृषभुजास्तुतिमये राधापद प्राप्तये।
तार्तीयीकतयागतः परिमितिं सर्गः समाप्तिं श्रितः।।3–75।।[1]

श्री राधा के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन कवि ने काव्य के प्रारंभ में ही इस प्रकार किया है–

राधे तवैव पदपद्मपरागपुञ्जे
भृङ्गायतां शिरइदं विनतं मदीयम्।
राधे तवैव मुखपार्वणचन्द्र बिम्बे
ज्योत्स्नाप्रियो भवतु चक्षुरिदं मदीयम्।।1–2।।[2]

स्वयं भगवान् श्री कृष्ण की भी श्री राधा के प्रति निरतिशय रति का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है

दिव्याङ्गनाकरकुशेशयसेविताङ्घ्रिः
शश्वन्निपीतकमलामधुराधरोऽपि।
आपीय 'रा' पदमहो चकितो मुरारि।
श्रुत्या च धेति सखि धावतितद्दिशायाम्।।1–33।।[3]

कहने का भाव यह है कि राधा नाम को सुनकर तो स्वयं भगवान् श्री कृष्ण भी उन्हें प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठते हैं। इसीलिये तो आधुनिक भक्तजन भी गाते हैं कि –

राधे राधे जपो, चले आएँगे बिहारी।''

---

[1] श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 3/75
[2] श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–1/12
[3] श्रीराधा चरिते– 1/33

उन्हीं श्री राधा जी के चरण कमलों में भक्तिपूर्वक नतमस्तक होता हुआ कवि कहता है कि –

बिम्बाधरां कुटिलकुन्तलभूषितास्यां

काञ्चीकलापकमनीय कुमुद्वतीकाम्।

मञ्जीरमण्डित मनोहर पादपद्मां

भक्त्या नमामि वृषभानुसुतांललामाम्।।1–35।।[1]

श्री कृष्ण प्रिया श्री राधा जी को भवसागर से पार होने के उद्देश्य से प्रणाम करता हुआ कवि कहता है कि–

देहप्रभाविजित चम्पककम्रताकां

दीव्यन्मरीचिमुखमार्जितशारदाब्जाम्।

नेत्राभिपीतनलिनीकमनीयताकां

कृष्णप्रियां भवहराय नमामि राधाम्।।1–34।।[2]

इसी भक्तिरसाप्लावित महाकाव्य में रासलीला के प्रसंग में कवि ने अद्भुत रस का भी बड़ा सुन्दर वर्णन इस प्रकार किया है–

अद्वैतमस्फुटमसौ मनसाऽप्यगम्यं

दिव्यं विचिन्तयति किं कदलीवनेऽन्तः।

नित्यं निलिम्पनिचयैरपि हन्तकस्मिन्

राधाऽपि राध्यचरणा रमतेऽतिरम्ये।।1–41।।[3]

रासलीला के मध्य में ही भगवान् वासुदेव के अन्तर्हित हो जाने पर विरहक्लान्ता श्री राधा जी ने कदलीवन में तपस्या की। उसी का वर्णन करते हुए कवि ने कहा कि वह देवताओं की भी समाराध्यचरणा श्री राधा भी कदलीवन में वाणी तथा मन से अगोचर मूर्तिरहित, अद्वैत तथापि दिव्य कौन सी वस्तु का चिन्तन करती है? यह अद्भुत

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 1–35।।*
[2] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 1/34।।*
[3] *श्रीराधा चरिते– 1/41*

आश्चर्य की बात है कि त्रिभुवन की आराध्य राधा भी उससे भी अधिक रमणीय कौन सी वस्तु में रमती है। यह अद्भुतरस का परिपाक है।

कवि ने अपने महाकाव्य में छन्दों तथा अलंकारों का प्रयोग भी अत्यन्त कुशलतापूर्वक बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। श्री राधाचरित महाकाव्य में वर्णित छन्द हैं–

अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, मालिनी, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, आर्या मञ्जुभाषिणी, रथोद्धता तथा प्रहर्षिणी। इस प्रकार कवि ने कुल मिलाकर सत्रह छन्दों का मनोहर निरूपण किया है।

अलंकारों के सन्निवेश में भी कवि सिद्ध हस्त है। प्रस्तुत महाकाव्य में निम्नलिखित अलंकारों की शोभा दृष्टिगोचर होती है–

अनुप्रास (छेकानुप्रास, वृत्त्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, अन्त्यानुप्रास, लाटानुप्रास), परिकर, उपमा, रूपक, यमक, उत्प्रेक्षा, असंभावितोपमा, श्लेष, विरोधाभास, भ्रान्तिमान्, यथासंख्य, अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यास, प्रतीप, निदर्शना, विभावना, दृष्टान्त, वक्रोक्ति, उल्लेख, व्यतिरेक, समासोक्ति, व्याजस्तुति, काव्यलिङ्ग, अनुमान, अन्योऽन्य, कारणमाला, अर्थापत्ति, स्वभावोक्ति, उदात्त तथा तद्गुण अलंकारों की शोभा दर्शनीय है। इस प्रकार कुल मिलाकर पैंतीस अलंकारों की छटा देखी जा सकती है।

श्री राधाचरित महाकाव्य में ललितपदावली युक्त भाषा लालित्य भी दर्शनीय है। त्रयोदश सर्ग में श्रीमद्भागवत कथा के प्रसंग में कथावाचन करती हुई श्री राधा के भाषा लालित्य एवं सौष्ठव का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि–

सा शब्दशय्या गलमाधुरी सा
विवेचना सा विषयस्य तस्याः।
वीणास्वनं सत्कविशब्दशय्यां
बलादतिक्राम्यति पण्डितायाः।।13–73।।[1]

---

[1] श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 13/73

उस पण्डिता कथावाचिका की कोमलकान्त पदावली सत्कवियों के भी शब्द विन्यास को, कण्ठमाधुर्य वीणा ध्वनि को तथा विषय विवेचना बड़े–बड़े पण्डितों को भी बलात् पछाड़ देती है। इसी मधुर प्रसंग में कवि कहता है कि

राजाधिराज मधुराधिपराजधान्यां

पीयूषवर्षि वचनं भगवत्कथायाम्।

श्रोतुं पयोदपटलं सततं समागाद्

भूतिर्मनोहरति भूतिमतोऽपि हन्त।।13–80।।[1]

भगवान् श्री कृष्ण की राजधानी मथुरा में कथा के समय अमृतमय वचनों को सुनकर बादल समूह उमड़ पड़ा। ऐश्वर्य सम्पन्न पयोद भी कैसे आ गया? इसके लिये कवि ने कहा कि ऐश्वर्य तो बड़े बड़े ऐश्वर्य वानों के मनों को भी हर लेता है।

श्री राधा कृष्ण की निकुञ्जलीला में द्वादश सर्ग में उनके परस्पर परिहास पूर्ण वार्तालाप में कोमलकान्त पदावली की छटा बिखरी पड़ी है। सप्तम सर्ग में पदलालित्य के सन्निवेश को प्रमाणित करता हुआ स्वयं कवि कहता है कि –

वांसीनद्या अमलपुलिने ख्यातखेतानवंशाद्

वृत्तिः प्राप्ताध्ययनसमये पाडरोना निवासात्।

राधाकाव्ये परम सुखदे येन पुण्ये तदीये।

प्रागात् पूर्तिं ललितवचनः सप्तमश्चारुसर्गः।।7–77।।[2]

वांसी नदी के निर्मल तट पर पाडरोना नगर निवासी प्रसिद्ध खेतानवंश से अध्ययनकाल में जिसने छात्रवृत्ति प्राप्त की, उनके परम सुखद पुण्य राधाकाव्य में ललित पदसन्निवेश के कारण चारुता सम्पन्न सप्तम सर्ग समाप्त हुआ। इसी सर्ग में जब व्रजाधिपति नन्द पत्नी यशोदा के साथ यमुनातीर पर विहार करने के लिए गए तब उत्कण्ठित हृदय वाले, यशोदा के द्वारा कातर दृष्टि से देखे जाते हुए नन्दराज ने सोचा कि मेरा घर भी पुत्रयुक्त हो जाए।

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 13/80*

[2] *श्रीराधा चरिते–7/77*

तिमिकेलिदर्शनसुखोत्कमानसः प्रियया तिकातरदृशा समीक्षितः।
निजवंशनीरधिमणिर्व्यचिन्तयन्मम सद्म सूनुसहितं भवेदपि।।7–10।।
इति चिन्तयन् शिशुमहो व्रजाधिपो मुरलीनिपीतमधुराधरामृतम्।
वपुषा विनिन्दितघनं महोज्ज्वलं वनमालया हिलसितं व्यलोकयत्।।7–11।।[1]

इस प्रकार अपनी अनपत्यता की चिन्ता करते हुए व्रजराज के सामने वंशी के द्वारा मधुर अधरामृत का पान किये जाते हुए घनश्याम महातेजस्वी वनमालामण्डित कोई शिशु प्रकट होकर बोला–

वचनं सुताभिलषितं सुधाशयं कलयञ्जगाद मृदु वृद्धदम्पती।
नमतं कलिन्दगिरिनन्दिनीं शिशुः सुतपूतसद्म युवयोर्भविष्यति।।7–13।।[2]

वृद्ध दम्पति यशोदा नन्द के पुत्र की अभिलाषा युक्त वचन सुनकर वह शिशु मृदु वचनों से बोला कि तुम दोनों कालिन्दी को नमस्कार करो। तुम दोनों का घर पुत्र सम्पन्न हो जाएगा। इस प्रकार पदलालित्य की शोभा अनेक स्थलों पर देखी जा सकती है।

कवि ने अपने महाकाव्य में अनेक स्थलों पर मुहावरेदार भाषा का भी अच्छा प्रयोग किया है। जैसे –

मधुरासव रसकुम्भं रसानभिज्ञा ग्रहीतुमपि नालम्।
कपयो विरुद्धगतयो हन्त शृंगवेरकभक्षणे।।6–71।।[3]

हे ग्वालो! रसानभिज्ञ लोग मधुररसपूर्ण घट को भी ग्रहण करने में भी असमर्थ होते हैं जैसे अदरक के भेजन में बन्दर विपरीत गति वाले होते हैं; तभी तो कहते हैं कि बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद। इसी प्रकार होलाकोत्सव में गोपियाँ ग्वालों से कहती हैं कि–

परिणाहि पक्व बिल्वो वायसमोदाय कल्पते नैव।
कुम्भोवसनैः पिहितो भ्रमयति मूढान् कथं भवतः।।6–72।।[4]

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये–7/10, 11।।*
[2] *श्रीराधा चरिते–7/13*
[3] *श्रीराधाचरितमहाकाव्ये–6/71*
[4] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–6/72*

अरे हलकर्षको! पका हुआ विशाल बिल्वफल कौओं को आनन्द देने वाला नहीं होता; इसीलिये कहते हैं कि "पका भी बेल कौओं के किस काम।" वस्त्रों से ढका हुआ भी कुम्भ तुम मूर्खों को कैसे भ्रमित कर रहा है। इस प्रकार मुहावरे– लोकोकितयों से सम्पन्न ललित पदावली युक्त भाषा लालित्य होलाकोत्सव में गोपियों तथा ग्वालों के वार्तालाप में खूब देखने को मिलता है। इसलिए कवि कहता है कि

वरसानोर्व्रजललना ललितं लीला वचः प्रयुञ्जानाः।
नन्दग्रामाभीरा जयन्ति होलोत्सवैः सुरभौ।।6–75।।[1]

ललित लीलावचनों का प्रयोग करती हुई बरसाने को व्रजाङ्गनाएँ तथा नन्दग्राम में ग्वाले वसन्त ऋतु में होलाकोत्सव में विजय प्राप्त करते हैं।

महाकाव्य के लक्षणों के अनुसार कवि ने प्रस्तुत महाकाव्य में प्रकृति चित्रण भी अत्यन्त मनोहर रूप में चित्रित किया है। प्रकृति चित्रण के अतर्गत कवि द्वारा वर्णित "राधा सरोवर्णनम्, यमुनावर्णनम्, प्रातः वर्णनम्, शरद् वर्णनम्, शिशिर वर्णनम्, वसन्तवर्णनम्, ग्रीष्म वर्णनम्, वर्षावर्णानम्, चन्द्रोदयवर्णनम्, तथा समुद्रवर्णनम् आदि प्रमुख रुपेण उल्लेखनीय एवं दर्शनीय वर्णन प्रस्तुत किए गए हैं।

राधा सरोवर की उत्पत्ति के विषय में कवि तर्क देता है कि

माद्यन्मतङ्गजविपाटन शैलभावं
वज्रायिताहि मदमर्दनपाणिपादम्।
राधा पदाब्जविरह द्रवतामुपेतं
राधा सरः पदमवाप नु कृष्णतत्त्वम्।।1–13।।[2]

कवि कहता है कि मतवाले कुवलयापीड हाथी को विपाटित करने में जो शैलभाव को प्राप्त होकर कठोर बन गया था, जिसके हाथ – पैर कालियनाग के मदमर्दन में वज्ररूप हो गए थे, वही कृष्ण तत्त्व श्री राधा के चरणकमलों के विरहजनित अग्नि से द्रवित होकर सरोवर रूप बन गया और इसीलिये इसका नाम 'राधा सरोवर' पड़ गया– ऐसा मेरा तर्क है।

---

[1] श्रीराधा चरिते– 6/75
[2] श्रीराधा चरित महाकाव्ये–1/13

वृन्दावन की प्रकृति भी दिव्य प्रकृति है; देखिये कवि के शब्दों में देवता ही वृन्दावन में तृणलता खग रूप में अवतरित हुए हैं।–

राधा पदाम्बुजरसैर्विमलं मनः स्वं

कर्तुं व्रजे तृणलताखगभावमाप्य।

शान्ताः सुरा जहति मुक्तिपदाभिलाषं

द्राक्षामुपेक्ष्य न बुधा बदरीं लिहन्ति।।1–29।।[1]

श्री राधा के चरणकमलमकरन्द से अपने मन को पवित्र करने के लिए देवता ही घास, लताकुञ्ज एवं पक्षिभाव को प्राप्त हुए हैं। इसीलिये शान्तमन वाले देवताओं ने अपने मोक्ष की अभिलाषा भी त्याग दी है क्योंकि बुद्धिमान् लोग अंगूरों को छोड़ कर बेरों में नहीं रमते।

कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है– देखिये राधा सरोवर कैसे श्री राधा जी का जल, फल, फूल एवं मधुर वचनों से स्वागत करता है–

वानीरजालविनिवारिततीरपङ्क

किञ्जल्क कुङ्कुमजलं करवीरकान्तम्।

राधासरो विहगकूजितशस्तशब्दं

स्वागच्छतीव वृषभानु सुतां ललामाम्।।1–44।।[2]

जिसके कीचड़ तीर भाग पर उगे हुए बेंत के वृक्षों के द्वारा धो दिये जाते हैं, जिसका जल किञ्जल्क भूत, कुङ्कुम से मिश्रित है तथा करवीर के फूलों से मनोहर है, जिसके पक्षियों का मधुर कूजन ही प्रशंसागीत है, ऐसा राधा सरोवर वरसानुपति वृषभानु की मनोरमा कन्या श्री राधा का मानो स्वागत कर रहा है। लोक में भी किसी महापुरुष के आने पर पुष्प, फल, जल एवं मधुर प्रशंसा वचनों से स्वागत किया ही जाता है।

यमुना के दिव्य मानवीकृत पापनाशक प्रभावशाली स्वरूप का चित्रण करता हुआ कवि कहता है कि–

मणिमण्डिततीरकुट्टिमा शिखिशाखाविलसत्तटच्छटा।

---

[1] *श्रीराधा चरिते– 1/29*

[2] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–1/44*

फलशालिकदम्बशालिनी यमुना भाति मलापहारिणी।।2–59।।[1]

मणियों से मण्डित तीर की पक्के फर्श वाली भूमि है जिसकी, शिखी मोरों से युक्त शाखाओं से सुशोभित है तट की छटा कान्ति जिसकी, वह फल युक्त कदम्बों वाली शोभासम्पन्न, पापों को नष्ट कर देने वाली यमुना अति सुन्दर शोभा पाती है।

प्रातःकाल की सुन्दर शोभा का वर्णन करता हुआ कवि सांगरूपक के द्वारा उषादेवी एवं वर भास्कर के शुभ विवाह का चित्रण करता हुआ कहता है कि–

शकुनिमङ्गलगीतिजयध्वनि प्रकृतिकल्पितपङ्कजमाल्यकः।

उडुगणान् परिहूय करेऽनले परिणयत्युषसं वरभास्करः।।3–35।।[2]

पक्षियों का कलरव ही जिसकी मांगलिक जय जय कार ध्वनि है, प्रकृति के द्वारा प्रस्तुत कमलों की माला ही जिसकी जयमाला है, वह सूर्य रूपी वर नक्षत्रगणों रूपी लाजाओं को अग्नि में हवन करके (लाजाहोम करके) उषा देवी के साथ परिणय कर रहा है।

मानवीकृत नवशरद बाला की मनोहर प्राकृतिक शोभा कितनी मनमोहक है, देखिये कवि के शब्दों में–

धवलकुसुमकाशालम्बमुक्ता कलापा

विलसितगतिकूजद्धंसमञ्जीरपादा।

अमलपुलिनवासाः सारसोदग्रनासा

विलसति नवबालाऽगस्त्यबालावतंसा।।4–69।।

श्वेतकाशपुष्प ही हैं लम्बे मुक्ता हार जिसके, विलासपूर्ण गति वाले कूजते हुए हंस ही हैं पैरों के नूपुर जिसके, निर्मल पुलिन (नदी का रेतीला तट) ही हैं वस्त्र जिसके, सारस ही हैं, उन्नत नासिका जिसकी, अगस्त्य के फूल ही हैं बालों के आभूषण जिसके ऐसी नवीन शरद् बाला विलसित (शोभायमान) हो रही है।

जहाँ कवि ने प्रकृति का इतना सुन्दर रूप दिखाया है, वहीं पर प्रकृति का कुत्सित विलास भी कवि की दृष्टि से बच नहीं पाया है–

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये–2/59*

[2] *श्रीराधा चरिते–3/35*

कुचयुगपरिणाहा घर्मसन्तप्तरामाः

श्रममलिनमुखाभाः काण्डलावासमर्थाः।

परिगत परिणामं शालिजालं लुनन्ति।

प्रकृति विलसितं हा जीविका जीविताधिः।।4–75।।

विशाल स्तनों के भार से युक्त, घाम (धूप से सन्तप्त हुई अतः एवं मलिन मुखकान्ति वाली स्त्रियाँ फसलों की लावनी (कटाई) करने में असमर्थ होते हुए भी पकी हुई धान की फसल की कटाई कर रही हैं। कैसा दुःखद प्रकृति का विलास है यह जिसमें आजीविका कमाना भी जीवन की व्याधि बन जाती है।

शिशिर ऋतु का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि –

अभिभवविषयो न यत्प्रभावः समजनि हन्त सुरासुरेश्वराणाम्।

स हि कृपणदशां गतो विवस्वान् विधिरतिशेतइदं समस्तचक्रम्।।5–51।।

जिस सूर्य का प्रभाव अत्यन्त प्रभावशाली देवताओं और असुरों के तिरस्कार का विषय नहीं बन सका, वही सूर्य अब शिशिर ऋतु में दयनीयता को प्राप्त हो गया है। यह बड़े खेद का विषय है। यहाँ भाग्य की प्रबलता को सिद्ध करता हुआ कवि कहता है कि इस समस्त जगतीतल में विधि का विधान ही सबसे बढ़कर बलवान् होता है। तभी तो शिशिर ऋतु में सूर्य का तेज भी ठण्डा पड़ जाता है। इस ऋतु में किसानों के खेतों में गेहूँ, चना, सरसों आदि की फसलें भरी खड़ी होती हैं, जो किसानों की दरिद्रता को दूर कर देती है, इसी लिये शिशिर की वैभव शालिनी शोभा का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि–

प्रकृतिविलसितैः समृद्धिसारैर्हलिहृदयोत्सवसीमदारदक्षैः।

व्यपगतदुरवस्थताविलासः शिशिरऋतुर्विभवैर्विराजतेऽलम्।।5–70।।[1]

हल चलाने वाले किसानों के मन के उल्लास की सीमाओं का भी भेदन कर देने वाले प्रकृति से उत्पन्न समृद्धि के सारभूत धान्यों से दारिद्र्य के विलास को नष्ट कर देने वाली शिशिर ऋतु उन सम्पदाओं से अत्यन्त शोभायमान हो रही है।

इसके पश्चात् बसन्त ऋतु का स्वागत करती है वनलक्ष्मी –

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्ये– 5/70*

सुरभिनवकुसुममालां करदलपुटकेनिधाय विपिन श्रीः।

मधुरैः पिककुलरावैर्व्याहरति स्वागतं सुरभेः।।6–26।।[1]

वनलक्ष्मी कर किसलय रूपी पात्र में सुगन्धित नए फूलों की माला रखकर कोयलों की मधुर ध्वनियों से बसन्त का स्वागत करती है। प्रकृति का मानवीकरण दर्शनीय है। वसन्त की शोभा का वर्णन देखिये कवि के शब्दों में–

गोधूमकनकमुकुटा लसदतसी कुसुमालिपत्रलेखा।

सर्षपशिमिताटङ्का धरणी रमणीव रमणीया।।6–41।।[2]

गेहूँ की बालियों का सुनहरी मुकुट धारण किये हुए शोभायमान अतसी के फूल की पत्रलेखा को कपोलों पर धारण किये हुए पृथ्वी कमनीय कामिनी की भाँति सुशोभित हो रही है। इसके पश्चात् आती है हेमन्त ऋतु जिसमें फूल रोते हुए दिखाई देते हैं जैसे–

विलपति हैमनकुसुमं विहसति कुसुमाकरेण वासन्ती।

प्रभवति विधिर्विधातुं सकलं प्रतिकूलमनुकूलम्।।6/42।।[3]

हेमन्त में उत्पन्न होने वाले फूल विलाप करते हैं जबकि वासन्ती पुष्प छटा वसन्त के साथ हँसती है। इस प्रकार प्रकृति के दोनों प्रकार के रूप दिखाते हुए कवि ने यह सिद्ध किया है कि विधि (भाग्य) सब अनुकूल को प्रतिकूल तथा प्रतिकूल को अनुकूल बना देने में समर्थ होता है। इसीलिये कवि कहता है कि –

सस्यानि यानि शिशिरे हरितदललिलितसुमान्यमोदिषत।

शातित दलानि तानि क्षेमे सीदन्ति कालेन।।6–43।।[4]

शिशिर ऋतु में हरे पतों से तथा मनोहर पुष्पों से जो फसलें आनन्द मग्न हो रही थीं, वहीं फसलें हेमन्त ऋतु में पत्ते झड़ जाने के कारण दुःख उठा रही होती हैं।

इस प्राकृतिक चित्रण के द्वारा कवि ने मानव जीवन की भी भाग्यानुसार परिवर्तनशील अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों की ओर भी संकेत कर दिया है

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 6/26*
[2] *श्रीराधा चरिते–6/41*
[3] *श्रीराधाचरित महाकाव्ये– 6/42*
[4] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 6–43*

जिसके परिणाम स्वरूप कभी तो मानव जीवन आनन्दमय हो जाता है तथा कभी दुःखमय हो जाता है, यह सब विधि के विधान का ही फल होता है।

चन्द्रोदय का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि–

सुतोत्सवं वीक्षितुमाकुलोऽपि सन् व्रजाङ्गनावाममुखावलोक्नात्।
सरागवक्त्रो रजनीपतिः शुभः शनैश्शनैर्भीत इवागमद् व्रजम्।।7–41।।[1]

पुत्रोत्सव (श्री कृष्णजन्मोत्सव) को देखने के लिए अत्यन्त शीघ्रता करता हुआ भी शुभ राकेश व्रजवनिताओं के मुख को देखने से राग युक्त होकर भयभीत हुआ धीरे–धीरे व्रज में प्रविष्ट हुआ अर्थात् चन्द्रोदय हो गया। आगे कवि कहता है कि–

धरां व्रजस्याघहरांवितर्कयन् प्रियां प्रतीचीमपि गन्तुमुत्सुकः।
क्षणंतदाऽस्थात् शशलांछितोऽप्यसौ समादरः पुण्यपदस्यकामदः।।7–47।।[2]

अपनी प्रिया प्रतीची (पश्चिम दिशा) के पास जाने के लिए उत्सुक होते हुए भी शशांक चन्द्रमा व्रजभूमि को पापहरने वाली सोचकर जन्मोत्सव में कुछ क्षणों के लिए व्रज में रुक गया; क्योंकि पुण्यपाद समादरणीय का समादर कल्याणकारी होता है।

इसी प्रकार अनेक स्थलों पर कवि ने बड़े अच्छे–अच्छे मुहावरे लोकोक्तियाँ एवं शिक्षाप्रद सूक्तियाँ ऐसे सुन्दर ढंग से सजाई हैं कि जिससे महाकाव्य में काव्य सौन्दर्य को चार चाँद लग गए हैं। ऐसी सूक्तियों की संख्या अस्सी के लगभग है जिनकी पूरी सूची अन्त में संलग्न कर दी गई है।

श्री राधा चरित के निर्माण में कवि ने संस्कृत के सर्वमान्य कवि कालिदास की ललित पदावली तथा भावों को बड़ी रोचकता से अपनाया है। रूढ़ विषयों के वर्णन में भी कवि ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। ऋतुओं का वर्णन सजीव है। उद्दीपन रूप में बसन्त का चित्र देखिये–

अतिमुक्तचम्पकवने सरोजिनीवदनासवेनमुदितः समीरणः।
दयिताः प्रियाङ्कशयने निषेवतेशयितारतिश्रमनिदाघभूषिताः।।7–2।।[3]

---

[1] श्रीराधा चरित महाकाव्ये–7/41
[2] श्रीराधा चरिते–7/47
[3] श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–7/2

अतिमुक्त और चम्पक वनों में कमलिनियों के मुखपराग से प्रसन्न पवन पति की गोद में रतिश्रमजन्यस्वेदयुक्त सोई हुई प्रियतमाओं की सेवा करता है।

कवि ने प्रकृतिवर्णन द्वारा तत्कालीन वातावरण निर्माण में एक विशेष सुषमा उद्मासित की है। वर्षाकाल में झींगुरों के शब्दों द्वारा रात्रि के सन्नाटे का अनुभव होता है। देखिये कवि के शब्दों में–

झिल्लीका झन–झन निःस्वने निशीथे
रन्तुं केतकसुमनोमनोमिरामे।
राधायाः पुलकितपाणिमादधानः
कालिन्दीमतितरलामगान् मुरारिः।।10–42।।[1]

झिल्लियों (झींगुरों) के झन–झन शब्द युक्त केतक पुष्पों से मनोभिराम रात्रि में भी श्रीराधा के रोमांचित हाथ को थामे हुए मुरारि अत्यन्त तरंगित होती हुई यमुना पर गए। यहाँ रात्रि के सन्नाटे पूर्ण वातावरण में वर्षा ऋतु के वर्णन में प्रकृति का उद्दीपन रूप चित्रित किया गया है। इसी प्रकार कीचड़ भरे जल में शूकरयूथों का घों–घों भरा शब्द उनकी स्वाभाविक क्रियाओं का आभास कराता है। रास गीत के प्रभाववश कपोत भी 'ओंकार' 'ओम्' 'हुम्' आदि शब्द करते लक्षित होते हैं–

मत्ताः कपोताः कमनीयकायाः कुलायवासा अनुरासगीतम्।
ओङ्कार हुङ्कार गिरो गृणानाः स्वचेतसागीतगवीमुपेताः।।9–64।।[2]

बरसाना नगरी का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वह नगरी स्वयमुद्गता थी, किसी के द्वारा निर्मित नहीं। उसके चतुर्दिक् सौन्दर्य को देखने के लिए ब्रह्मा स्वयं चतुर्मुख हो गए–व्रजभू सरसी सरोजिनी बरसानुः स्वयमुदगतापुरी।
परितः परिपातुमीक्षणैर्विधिरेनां किममूच्चतर्मुखः।।2–1।।[3]

नगरी का वर्णन परम्परा नुगामी है, वह प्राचीन काव्यों के वर्णनों का स्मरण कराता है। विलासीजनों के गृह–शुक नायक–नायिकाओं की रतिक्रीड़ा का वर्णन इस प्रकार करते थे–

---

[1] श्रीराधा चरिते– 10/42
[2] श्रीराधा चरिते– 9/64
[3] श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– 2/1

यद्गारशुकोऽपिमानिनीं रतिकामोत्सवहृद्मवार्तया।

प्रियभर्तुरलं प्रसादयन् निशि साचिव्यमुपैति नर्मणः।।2–8।।[1]

स्थान – स्थान पर कवि ने विभिन्न शास्त्र चर्चा के द्वारा अपने पाण्डित्य को व्यक्त किया है– यथा व्याकरण, न्याय, वेदान्त, योग तथा साहित्य के सिद्धान्तों का निरूपण भी यथास्थान सुरुचिपूर्ण बन गया है। राधा–कृष्ण की एकता और उनकी अभिन्नता को प्रतिपादित करने वाले उपनिषद् के दुरूह सिद्धातों को सरल शब्दों में व्यक्त कर कवि ने अपने वैदुष्य को प्रतिपादित किया है। वर्तमान काल के आचार विचार की जानकारी की प्रभूत सामग्री इस काव्य में उपस्थित है, जैसे– मथुरा नगरी का वर्णन। कवि का निरीक्षण व्यापक है। संक्षेप में कह सकते हैं कि इस महाकाव्य में ही हृदय पक्ष तथा कलापक्ष – दोनों का मञ्जुल सामंजस्य सहृदयों के हृदयावर्जन में सर्वथा समर्थ है। मिश्र शैली में निबद्ध यह महाकाव्य अलंकारजन्य चमत्कारों से तथा काव्य गुणों से सर्वथा मण्डित है। !

अन्तिम निष्कर्ष के रूप में हम आचार्य कालिकाप्रसाद शुक्ल जी के सुपुत्र तथा प्रस्तुत महाकाव्य के सम्पादक एवं प्रस्तावना लेखक आचार्य रामनारायण शुक्ल जी के शब्दों में कह सकते हैं कि–

"श्री राधाऽपरनामधेयं 'प्रेम' महामन्त्रं सकृदपि समुच्चारयितुर्मनसि समोऽपि पुरुषार्थो निष्फलतां याति। अर्थात् तस्य मनः समस्तेऽपि पुरुषार्थे न रमते। तात्पर्यमिदमत्र यत् यथा त्रिभुवनप्रकाशयितुर्भानो समुदये सर्वेऽपि प्रकाशाः मन्दतामुपयान्ति, तथैव श्री राधानामोच्चारणे सर्वेऽपि पुरुषार्था विलयं प्रयान्ति।

तस्या एव करुणामय्याः सकल ब्रह्माण्डकारणी भूताया श्री राधायाः पादपद्मे वाङ्मयी समर्चना कविना त्रयोदशसर्गात्मना काव्येनानेन विहिता, न तु स्वस्य महाकवित्वलाभाय। एक सहस्राधिकश्लोकात्मकस्य काव्यस्यास्य वैशिष्ट्यमिदमस्ति यत् ललितोर्मिसमस्तानां पदानां सन्निवेशो महाकवि कालिदासस्य काव्यमनुहरति। कविरत्र श्रीराधास्तवनानन्तरं श्रीराधा कुण्डस्य, श्रीराधासरसः, वरसानु नगर्याः, तत्रस्य गह्वरवनस्य

[1] श्री राधा चरित महाकाव्ये–2/8

च, गोवर्धन गिरेश्च तथा चित्रणं करोति, यथा ते सर्वेऽपि पदार्थाः पाठकानां दृष्टिपथे बलात् समुल्लसन्ति। कलिन्दगिरिकन्यायाः श्री यमुनाया वर्णने तु कवेर्लेखनी तस्यास्तरङ्ग इव स्वच्छन्दं प्रवहति। तस्या निखिलमलापहारिणीत्वं तु भगवतीं भागीरथीमप्यतिशेते। रासलीलाया ललितं निरुपणं तु तथा प्रतिभासयति यथा कविरयं तत्रोपविश्य वर्णयन् भवेत्। यद्यपि श्रीमद् भागवत वर्णनात् किञ्चिदिव भिन्नमिदं वर्णनम्, तथापि आनन्दसन्दोहोत्पादकमवश्यमेव। निरूपणमिदं शास्त्रे नैपुणीमिव ललितकला नैपुणीमपि प्रख्यापयति।

स्थाने स्थाने आश्रम वर्णिनां शास्त्र चर्चा प्रसङ्गे व्याकरणस्य, न्यायस्य, वेदान्तस्य, योगस्य, किम्बहुना, साहित्यस्यापि सिद्धान्तनिरूपणं विदुषां मनो मोहयति। वरसानुवर्णनेऽनुरागवैराग्ययोः साधु समन्वयः प्रेक्षावतां मानस–मयूरं नवनीरद इव नर्तयति।

श्रीराधाकृष्णयोरभेदप्रतिपादने दुरूहा उपनिषत् सिद्धान्ताः काव्य शब्दैस्तथा समुपस्थापिता येन मन्दधियामपि त अञ्जस्येनावगता भवन्ति। प्रश्नोत्तर मुखेन कृष्णाकृष्णयोरक्य समर्थनं तु कवेरनुपमां काव्यचातुरीं शास्त्र चातुरीं च व्यनक्ति।

शबरीणां शुद्धान्तःकरणस्य निरूपणं तु कवेरस्य परमायाः प्रतिभायाः परां काष्ठां निर्दिशति; मनसो निर्मलत्वं भगवद्भक्तेषु श्रद्धातिशयञ्च द्योतयति। वस्तुतो भगवान् स्वापेक्षया स्वभक्तस्य कल्याणं विशेषतश्चिन्तयति।[1]

मैं तो अन्तिम शब्दों में श्री शुक्ल जी के स्वर में स्वर मिलाकर यही कहना चाहती हूँ कि–

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनज्ञः।।

अन्यच्च–

मृगमदकृतचर्चा, पीतकौशेयवासा
रुचिरशिखिशिखण्डा, बद्धधम्मिल्लपाशा।

अनृजु निहितमंसे, वंशमुत्क्वाणयन्ती
धृतमधुरिपु लीला, मालिनी पातु राधा।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं, मात्राहीनं च यद् भवेत्।

तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि!!

---

[1] श्रीराधा चरित महाकाव्यस्य प्रस्तावना; पृ0 12–14